वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 262 गुरुवार 12 फरवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ पेज 3 पर

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

दिया का 'सप्तऋषि' बजट

डिजिटल राजस्थान का नया अध्याय

मेधावियों को ई-वाउचर और 42 हजार किमी सड़कों का जाल; विकसित प्रदेश का मास्टर प्लान पेश।

विकसित राजस्थान का महा-प्रारूप

21.52 लाख करोड़ का ऐतिहासिक निवेश और 4 लाख नौकरियों की कार्ययोजना, उद्योगों के लिए मेगा निवेश का खुला द्वार

राजस्थान की उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए राज्य का 'भाग्य-पत्र' प्रस्तुत करते हुए विकास और विश्वास का एक नया प्रतिमान स्थापित किया है। 21.52 लाख करोड़ रुपए के इस महा-बजट ने न केवल आंकड़ों के मामले में इतिहास रचा है, बल्कि समाज के हर वर्ग के लिए खुशहाली का द्वार भी खोला है। सरकार ने इस बजट के माध्यम से 'सप्तऋषि' प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें युवाओं के लिए 4 लाख सरकारी नौकरियों का महत्वाकांक्षी रोडमैप, 28 लाख निर्धन परिवारों के लिए पक्के आवास का संकल्प और किसानों के लिए बोनस व ब्याजमुक्त ऋण की बड़ी सौगातें शामिल हैं। बुनियादी ढांचे के लिए एक लाख करोड़ का प्रावधान और आमजन के लिए 'राज सुरक्षा' जैसी योजनाएं स्पष्ट करती हैं कि यह बजट केवल राजकोषीय लेखा-जोखा नहीं, बल्कि विकसित राजस्थान के निर्माण की दिशा में एक निर्णायक छलांग है।

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान की उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को विधानसभा में राज्य का अब तक का सबसे बड़ा और महत्वाकांक्षी बजट प्रस्तुत किया। वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए पेश किए गए इस बजट का कुल आकार 21.52 लाख करोड़ रुपए रखा गया है, जो पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 41.39 प्रतिशत की भारी वृद्धि दर्शाता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सरकार के इस तीसरे बजट को विशेषज्ञों ने 'आर्थिक क्रांति का आधार' बताया है, जिसमें राजकोषीय विवेक और जन-कल्याणकारी योजनाओं के बीच एक सटीक संतुलन साधने का प्रयास किया गया है। लगभग 2 घंटे 54 मिनट लंबे अपने बजट भाषण में वित्त मंत्री ने बुनियादी ढांचे, कृषि, युवा शक्ति और मध्यम वर्ग के सशक्तिकरण पर अपना ध्यान केंद्रित रखा। बजट की घोषणाओं के बाद मुख्यमंत्री ने इसे 'ऐतिहासिक और सर्वस्पर्शी' बताते हुए वित्त मंत्री का मुंह मीठा कराया। प्रदेश के आर्थिक विकास की गति तेज करने के लिए सरकार ने 1 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत व्यय का प्रावधान किया है। **संपर्क मार्ग:** प्रदेश में 42 हजार किलोमीटर नए सड़क जाल का विस्तार किया जाएगा। **पुल और उन्नत मार्ग:** शहरी यातायात की समस्या सुलझाने के लिए टोंक में 130 करोड़ का उन्नत मार्ग (एलिवेटेड रोड) और चित्तौड़गढ़ में 25 करोड़ की लागत से बेड़च नदी पर पुल सहित दर्जनों जिलों में उच्च स्तरीय पुलों का निर्माण किया जाएगा। झालावाड़, उदयपुर, भीलवाड़ा और डूंगरपुर जैसे जिलों में पुलों के लिए करोड़ों की धनराशि आवंटित की गई है। वित्त मंत्री ने 'सबके लिए आवास' के संकल्प को दोहराते हुए 28 लाख परिवारों को नए मकान बनाने की मंजूरी दी है। **मुद्रांक शुल्क में राहत:** मध्यम वर्ग को बड़ी राहत देते हुए मुद्रांक शुल्क (स्टैंप ड्यूटी) में कटौती की गई है। **ऋण पंजीयन व्यवस्था:** गृह ऋण लेने की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए नई पंजीयन व्यवस्था लागू की जाएगी। व्यापारिक सुगमता को बढ़ावा देने के लिए उद्योगों को बिजली और भूमि आवंटन में छूट दी गई है। **गैस और विद्युत वाहन:** प्रदेश में प्रदूषण कम करने के लिए 60 नए सीएनजी स्टेशन और 250 विद्युत वाहन शुल्क केंद्र (चार्जिंग पॉइंट) स्थापित किए जाएंगे।

शिव-तत्त्वः दार्शनिक एवं अनुभूतिपरक विमर्श—सृष्टि, लय और अद्वैत चेतना!

डॉ. पंकज भारती - सारण, बिहार

यदि संपूर्ण ब्रह्मांड की उत्पत्ति, उसकी निरंतर गति और उसके पार व्याप्त उस परम सत्ता को किसी एक संक्षिप्त अभिव्यक्ति में बाँधना हो, तो 'शिव' से अधिक उपयुक्त शब्द संभव नहीं है। शिव केवल एक नाम नहीं, बल्कि वह अनंत चेतना हैं जो सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। वे वह तत्व हैं जो न दिखाई देते हैं, न पूरी तरह परिभाषित किए जा सकते हैं, फिर भी हर अनुभूति में उपस्थित रहते हैं। ब्रह्मांड की सीमाओं के भीतर और उससे परे जो शाश्वत ऊर्जा व्याप्त है, वही 'शिव' है। शिव का अर्थ है कल्याण, स्थिरता और परिवर्तन का संतुलन। वे सृजन, संरक्षण और संहार—तीनों के मूल में स्थित हैं। शब्द, रूप और विचार की सीमाओं से परे जो सत्य है, वही शिव रूप में अनुभूत होता है। इसलिए जब उस अव्यक्त, अनिर्वचनीय और सर्वव्यापी चेतना को किसी एक नाम में समेटने का प्रयास किया जाता है, तो ह्यशिवह्ल के अतिरिक्त कोई अन्य शब्द उसकी व्यापकता को अभिव्यक्त नहीं कर सकता। शिव कोई व्यक्ति नहीं, कोई देवता मात्र नहीं, कोई सीमित आख्यान नहीं; शिव एक तत्व हैं, एक सनातन सत्य हैं, एक ऐसी अनुभूति हैं जो हर उस सीमा को लांघ जाती है जिसे मानवीय बुद्धि ने परिभाषित किया है। वे सर्वव्यापी हैं, निराकार हैं और शाश्वत, ठीक वैसे ही जैसे आकाश है—स्पर्श से परे, दृष्टि से परे, किंतु सर्वत्र विद्यमान। वे किसी दर्शन के पन्नों में बंद कोई सिद्धांत नहीं, बल्कि उस अनुभव का नाम हैं जहाँ पहुँचते ही शब्द, तर्क और भाषा स्वयं मौन हो जाते हैं, केवल एक गहन, गंभीर और अकथनीय प्रकाश शेष रह जाता है, जैसे प्रातःकाल का वह पल जब सूर्योदय से पूर्व समस्त संसार एक पवित्र मौन में डूबा होता है। शिव ही शून्य हैं और शिव ही अनंत। यह विरोधाभास प्रतीत होने वाला कथन ही शिव-तत्व को समझने की कुंजी है, वह द्वार है जिसे खोलते ही एक ऐसा विशाल हॉल दिखाई देता है जहाँ विपरीतताएँ एक-दूसरे में विलीन हो जाती हैं। क्योंकि ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक ही सागर की दो लहरें हैं। शून्य, जहाँ कुछ भी नहीं है—न रूप, न रंग, न आकार, न ध्वनि—वह पूर्णता की वह अवस्था है जहाँ सब कुछ समाहित है, जैसे एक बीज के भीतर सम्पूर्ण वटवृक्ष सोया पड़ा है। और अनंत, जहाँ सब कुछ है—असंख्य रूप, अगणित क्रियाएँ, असीम विस्तार—वह उसी पूर्णता की अभिव्यक्ति है, जैसे वही वटवृक्ष अपनी शाखाओं, पत्तों, जड़ों से आकाश और पाताल को छू रहा है। इन दोनों के बीच सेतु हैं शिव। वही मौन हैं और वही नाद। वही समाधिस्थ योगी हैं और वही प्रलयंकारी नटराज। सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व भी शिव थे और सृष्टि के लय के पश्चात भी शिव ही शेष रहेंगे, ठीक उसी प्रकार जैसे समुद्र में लहरें उठती हैं और गिरती हैं, किंतु समुद्र अपने स्थान पर अडिग बना रहता है। वे न आदि हैं, न अंत; वे स्वयं काल के भी परे हैं, क्योंकि काल उनकी ही एक लीला है, उनकी साँसों का उतार-चढ़ाव है। जहाँ मानवीय बुद्धि अपनी सीमाओं से टकराकर ठहर जाती है, जहाँ गणित के जटिलतम समीकरण उत्तर देने में असमर्थ हो जाते हैं, और जहाँ विज्ञान अपनी समस्त खोजों के बावजूद अंतिम सत्य को स्पर्श नहीं कर पाता, वहीं से शिव का साम्राज्य आरम्भ होता है।

नवग्रहों को बाँधने की भूल और कर्म-नियत का शाश्वत सत्य

नितिन जैन

महाराजा रावण अपार शक्ति, विद्या और तप का प्रतीक था। शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि उसने अपनी सत्ता को अजेय बनाने के लिए नवग्रहों को भी अपने वश में करने का प्रयास किया। मान्यता है कि उसने उन्हें बंदी बनाकर अपने पक्ष में मोड़ना चाहा, ताकि भाग्य भी उसकी मुट्ठी में रहे। परंतु इतिहास और पुराण दोनों गवाही देते हैं कि यह प्रयास अंततः विनाश का कारण बना। शक्ति का दुरुपयोग और अहंकार का बोझ किसी भी युग में क्षमा नहीं होता। रावण का अंत सबको मालूम है—अत्यंत सामर्थ्य के बावजूद पतन, क्योंकि कर्म और नियत दोनों भटकी हुई थीं।इस प्रसंग से एक साधारण-सा, पर गहरा संदेश मिलता है। कोई भी व्यक्ति, चाहे कितना ही समर्थ क्यों न हो, यदि वह व्यवस्था, मयार्दा और नैतिकता को अपने स्वार्थ में मोड़ना चाहता है, तो परिणाम शुभ नहीं होते। ग्रह-नक्षत्र हों या परिस्थितियाँ, वे तभी अनुकूल होती हैं जब मन की दिशा सही हो। बाहरी उपायों से भाग्य को बाँधा नहीं जा सकता; वह तो अंतर्मन के आचरण से स्वयं जुड़ता है।आज के समय में भी लोग त्वरित लाभ के लिए शॉर्टकट खोजते हैं—कभी दबाव, कभी भय, कभी छल से परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने की कोशिश करते हैं। पर यह राह अंततः वही कहानी दोहराती है। जो लोग कर्म को पीछे छोड़कर केवल परिणाम साधना चाहते हैं, वे भूल जाते हैं कि नियत ही कर्म को दिशा देती है। अच्छी नियत के बिना अच्छे कर्म भी खोखले हो जाते हैं और गलत नियत के साथ की गई चतुराई देर-सबेर उलटी पड़ती है।जीवन का शाश्वत नियम सरल है—कर्म अच्छे करो और नियत भी ठीक रखो। जब उद्देश्य स्वच्छ होता है, तब साधन भी स्वतः पवित्र हो जाते हैं। तब किसी को बाँधने, दबाने या मोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती; परिस्थितियाँ स्वयं साथ देती हैं। यही कारण है कि सच्चा बल बाहुबल में नहीं, चरित्र में होता है। जो अपने भीतर सत्य, संयम और करुणा को बाँध लेता है, उसके लिए नवग्रह भी अनुकूल हो जाते हैं।अंततः सीख यही है कि शक्ति, पद या चतुराई से नहीं, बल्कि शुद्ध कर्म और सही नियत से जीवन जीता है। इतिहास हमें चेतावनी देता है, वर्तमान हमें अवसर देता है और भविष्य हमारा इंतजार करता है—कि हम किस राह को चुनते हैं।

भक्ति में शक्ति

भक्ति केवल पूजा-पाठ या धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मन, विचार और कर्म की शुद्धता का मार्ग है। जब मनुष्य सच्चे हृदय से ईश्वर में आस्था रखता है, तब उसके भीतर एक अद्भुत शक्ति का संचार होता है। यही शक्ति उसे जीवन की कठिनाइयों से जूझने का साहस देती है।

अनिल माथुर

भक्ति मन को स्थिरता और शांति प्रदान करती है। जब व्यक्ति दुख, भय या असफलता से घिरा होता है, तब भक्ति उसे टूटने नहीं देती। ईश्वर पर अटूट विश्वास उसे यह अनुभूति कराता है कि वह अकेला नहीं है। यही विश्वास मनुष्य को भीतर से मजबूत बनाता है और आत्मबल को जाग्रत करता है। इतिहास और पुराणों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ भक्ति ने असंभव को संभव कर दिखाया। भक्त प्रह्लाद की अडिग भक्ति, मीरा की कृष्ण-प्रेम में डूबी साधना और हनुमान जी की राम-भक्ति—ये सभी इस सत्य को प्रमाणित करते हैं कि भक्ति में अपार शक्ति निहित है। यह शक्ति केवल चमत्कार नहीं करती, बल्कि चरित्र का निर्माण भी करती है।

सच्ची भक्ति मनुष्य को अहंकार से दूर रखती है और सेवा, करुणा व प्रेम की भावना विकसित करती है। जब भक्ति कर्म से जुड़ती है, तब वह समाज और मानवता के लिए कल्याणकारी बन जाती है। ऐसी भक्ति व्यक्ति को एक श्रेष्ठ इंसान बनाती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भक्ति कमजोरों का सहारा नहीं, बल्कि शक्तिशाली बनने का मार्ग है। जो व्यक्ति भक्ति को जीवन में अपनाता है, वह आंतरिक रूप से सशक्त, संतुलित और सकारात्मक बनता है। सच ही कहा गया है– 'जहाँ भक्ति है, वहीं शक्ति है।'

पदमपुरा पंचकल्याणक: जन्माभिषेक कलशों के लिए जयपुर एवं आसपास के श्रद्धालुओं में भारी उत्साह

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में 18 से 22 फरवरी तक आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी ससंघ एवं गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी के पावन सानिध्य में पंचकल्याणक महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। इस महोत्सव में तीर्थंकर के जन्म कल्याणक पर किए जाने वाले 1008 कलशाभिषेक के बैनर का विमोचन पदमपुरा, त्रिवेणी नगर, झोटवाड़ा, थड़ी मार्केट, मीरा मार्ग, जनकपुरी, दुगार्पुरा सहित अनेक जैन मंदिरों में किया गया है। पदमपुरा क्षेत्र के संयुक्त मंत्री जितेंद्र मोहन कासलीवाल ने बुधवार को त्रिवेणी नगर में बताया कि पांडुक शिला पर भगवान के अभिषेक के लिए हीरक, रत्न, स्वर्ण, रजत, ताम्र एवं साधारण वर्ग के कलश उपलब्ध कराए जाएंगे। अभिषेक करने वाले पुरुष केसरिया दुपट्टा और महिलाएँ पीली/केसरिया साड़ी पहनकर जन्माभिषेक कर सकेंगी। सभी भक्तों के लिए यह एक

सुनहरा अवसर होगा। इस अवसर पर त्रिवेणी नगर अध्यक्ष महेंद्र काला, अशोक जैन, अंकुर पाटोदी, एन.के. सेठी, महावीर जैन, बबीता जैन सहित टीम के ज्ञान चंद भोंच, सौभाग्य अजमेरा, मिश्री लाल काला, महेश काला आदि उपस्थित रहे। कलश आवंटन टीम के पदम जैन बिलाला ने बताया कि श्रद्धालुओं में पंचकल्याणक महोत्सव और विशेषकर जन्माभिषेक कलशों के प्रति भारी उत्साह है। इससे पूर्व टोंक, निवाई, चाकसू सहित प्रताप नगर, चित्रकूट, मधुबन, महेश नगर, चोमू बाग, श्याम नगर, कीर्तिनगर, राधा निकुंज आदि स्थानों पर भी कलशों के कूपन जारी किए गए हैं। पदमपुरा क्षेत्र के अध्यक्ष सुधीर जैन व मंत्री हेमंत सोगानी ने बताया कि श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु पदमपुरा क्षेत्र पर सभी प्रकार के कूपन वितरण के लिए अलग से काउंटर प्रारंभ कर दिया गया है। जन्म कल्याणक महोत्सव 19 फरवरी को होगा और इस दिन बसों की विशेष व्यवस्था प्रस्तावित है। पदमपुरा पंचकल्याणक में 'जन्म कल्याणक अभिषेक' कूपन हेतु निम्नलिखित सदस्यों से संपर्क किया जा सकता है:

टोंक: ज्ञान पाटनी, निवाई: विमल पाटनी व शशि जैन, चाकसू: ज्ञान सोगानी, जनकपुरी: देवेंद्र कासलीवाल, प्रताप नगर-8: अनिता इटूंडा व स्नेहलता, मीरा मार्ग: सुनील काला, थड़ी मार्केट: नरेन जैन, कीर्ति नगर: सुकेश काला, दुगार्पुरा: अक्षय जैन, प्रताप नगर-17: लवनेश बगड़ा, मंगलम सिटी: रमेश पाटोदी, करघनी: पवन पांड्या, राधा निकुंज: सुरेंद्र काला, झोटवाड़ा: नवीन पांड्या, चित्रकूट: ओम प्रकाश, चोमू बाग: अशोक-आशिष जैन, वरुण पथ: तेज करण, महेश नगर: नवल जैन, मधुबन: अनिल जैन छाबड़ा, शहर क्षेत्र: निर्मल गोधा।

परिदृश्य

स्वामी दयानंद

योगेश कुमार गोयल

आर्य समाज के संस्थापक और आधुनिक भारत के महान चिंतक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 को गुजरात के टंकारा में हुआ था। वे केवल एक धार्मिक गुरु नहीं, बल्कि एक प्रखर देशभक्त, समाज सुधारक और आध्यात्मिक क्रांति के अग्रदूत थे। उनके कार्यों ने न केवल ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी, बल्कि पथभ्रष्ट हो रहे भारतीय समाज को वेदों की ओर लौटने का मार्ग दिखाकर नई ऊर्जा से भर दिया। स्वामी दयानंद का प्रारंभिक जीवन सुखद था, लेकिन बचपन की एक घटना ने मूर्ति पूजा के प्रति उनके दृष्टिकोण को बदल दिया और सत्य की खोज की व्याकुलता पैदा कर दी। 21 वर्ष की अल्पायु में वे घर-बार त्यागकर संन्यासी बन गए। ज्ञान की पिपासा उन्हें मथुरा के स्वामी विरजानंद के पास ले गई, जिन्हें अपना गुरु मानकर उन्होंने वैदिक शास्त्रों और योग का गहन अध्ययन किया। 1845 से 1869 तक की उनकी वैराग्य यात्रा आत्मिक साक्षात्कार और कठोर तप की साधना रही। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानंद की भूमिका मील का पत्थर साबित हुई। राष्ट्रवाद की अलख जगाते हुए 'स्वराज' का मंत्र सबसे पहले उन्होंने ही दिया था, जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' के नारे के रूप में जन-जन तक पहुँचाया। उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण कर वेदों की महत्ता समझाई और अपनी अमर कृति 'सत्यार्थ प्रकाश' के माध्यम से मानवता को सत्य और तर्क का मार्ग दिखाया। वेदों को सर्वोच्च मानने वाले स्वामी जी ने हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया। जातिवाद, बाल विवाह और सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध उनके अभियान के कारण उन्हें 'संन्यासी योद्धा' कहा जाता है। उन्होंने दलित उद्धार और स्त्री शिक्षा के लिए कई क्रांतिकारी आंदोलन चलाए। वे केवल हिंदू धर्म की विसंगतियों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि अन्य धर्मों में व्याप्त पाखंड और अंधविश्वास का भी तार्किक खंडन किया। उनका जीवन वैश्विक एकता और मानव कल्याण के प्रति समर्पित था। 10 अप्रैल 1875 को मुंबई में 'आर्य समाज' की स्थापना करना उनके जीवन का एक ऐतिहासिक कार्य था।

संपादकीय

सत्ता की आड़ में छिपी विकृतियों का काला चिट्ठा

विश्वभर में चर्चा का विषय बनी 'एपस्टीन फाइल्स' लगभग 60 लाख दस्तावेजों, छवियों और वीडियो का वह भयावह संग्रह है, जो अमेरिकी फाइनेंसर जेफ्री एपस्टीन और उसकी साथी घिसलीन मैक्सवेल द्वारा संचालित यौन तस्करी के साम्राज्य की पोल खोलता है। इसे दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों द्वारा पर्दे के पीछे किए जा रहे अमानवीय और घृणित कृत्यों का 'कच्चा चिट्ठा' कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। इन फाइलों में अदालती

रिकॉर्ड, गवाहों के बयान और निजी ईमेल शामिल हैं, जो एक ऐसे नेटवर्क का खुलासा करते हैं जिसकी पहुंच राजमहलों से लेकर व्हाइट हाउस तक थी। सोशल मीडिया और जांच रिपोर्टों में सबसे विचलित करने वाला खुलासा 'लोलिता' से जुड़ा है। व्लादिमीर नबोकोव के विवादित उपन्यास 'लोलिता' की पंक्तियाँ यौन शोषण का शिकार हुई नाबालिग लड़कियों के शरीर पर लिखी मिलीं। यह न केवल शारीरिक शोषण था, बल्कि पीड़ितों के मानसिक और मनोवैज्ञानिक हनन की पराकाष्ठा थी। न्यूयॉर्क का एक साधारण स्कूल टीचर रहा एपस्टीन देखते ही देखते रसूख और शोहरत के उस मुकाम पर पहुँच गया, जहाँ उसका उठना-बैठना दुनिया की शीर्ष हस्तियों के साथ होने लगा। एपस्टीन की गिरफ्तारी पहली बार 2005 में हुई थी, लेकिन 2008 में उसे महज 13 महीने की सजा देकर छोड़ दिया गया। गार्डियन की रिपोर्ट के अनुसार, एपस्टीन नाबालिग लड़कियों को हासिल करने के लिए इस हद तक सनकी था कि वह उनकी उम्र और नस्ल तक की 'आईडी' जांचने पर जोर देता था। अब जब 30 लाख से अधिक पन्ने और करीब 2 लाख तस्वीरें सार्वजनिक हुई हैं, तो वैश्विक राजनीति और कॉर्पोरेट जगत में हड़कंप मच गया है। इन फाइलों में डोनाल्ड ट्रंप, बिल गेट्स, एलन मस्क और ब्रिटेन के पूर्व राजकुमार एंड्रयू जैसे बड़े नामों का उल्लेख है। सबसे चौंकाने वाला नाम नॉर्वे की क्राउन प्रिंसेस मेटे-मैरिट का है, जिनका नाम दस्तावेजों में करीब 1000 बार आया है। हालांकि, उन्होंने इसे अपनी 'शर्मनाक दोस्ती' बताते हुए माफी मांग ली है। ब्रिटेन के राजकुमार एंड्रयू पर तो नाबालिग की तस्करी कर यौन संबंध बनाने के सीधे आरोप हैं, जिसके कारण किंग चार्ल्स तृतीय ने उनसे शाही उपाधियां तक छीन ली हैं। एपस्टीन फाइल्स का प्रभाव इतना गहरा है कि स्लोवाकिया के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार को इस्तीफा देना पड़ा और कई बड़े संगठनों के प्रमुखों को सार्वजनिक माफी मांगनी पड़ी। इस रहस्यमयी दुनिया को खंगालने के लिए 'जेमेल' जैसा टूल भी विकसित किया गया है, जहाँ लोग इन ईमेल्स को एक्सेस कर रहे हैं। ये फाइलें केवल एक अपराधी की कहानी नहीं हैं, बल्कि यह सत्ता, पैसे और प्रभाव के उस गंदे गठजोड़ का आईना है, जहाँ मासूमियत का सौदा किया जाता था। यह विश्व के चुनिंदा सत्ताधीशों की अनियंत्रित कुंठाओं और बाल यौन शोषण का वह काला अध्याय है, जिसे मिटाना अब इतिहास के बस में नहीं। यह मामला स्पष्ट करता है कि जब न्याय रसूख का गुलाम हो जाता है, तो मानवता शर्मसार होती है। -**राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

क्यों गायब हो रहे बच्चे?

डॉ. प्रियंका सौरभ

हरियाणा में गुमशुदगी के बढ़ते आंकड़े अब केवल पुलिस रजिस्टरों या सुर्खियों तक सीमित नहीं हैं; ये उन हजारों परिवारों की अनकही चीखें हैं जिनके आंगन आज सूने हैं। वर्ष 2025 में 17,500 से अधिक गुमशुदगी के मामले और प्रतिदिन औसतन 12 बच्चों का लापता होना किसी भी सभ्य समाज के लिए चेतावनी की घंटी है। यह स्थिति न केवल कानून-व्यवस्था की विफलता है, बल्कि हमारे सामाजिक सुरक्षा तंत्र पर भी गंभीर सवाल खड़े करती है। गुमशुदगी का सबसे भयावह पहलू यह है कि अब यह केवल घरेलू विवाद या भटकने का मामला नहीं रह गया है। जांच के साक्ष्य बताते हैं कि कई मामलों की जड़ें 'मानव तस्करी' जैसे संगठित अपराधों में गहरे तक धंसी हैं। हालांकि पुलिस 75 प्रतिशत मामलों को सुलझाने का दावा करती है, लेकिन शेष 25 प्रतिशत अनसुलझे मामले ही सबसे बड़ी चुनौती हैं। यही वे मामले हैं जहाँ लापता बच्चों का कोई सुराग नहीं मिलता और वे अंतरराज्यीय गिरोहों या अवैध प्लेसमेंट एजेंसियों के चंगुल में फंसकर आर्थिक और शारीरिक शोषण का शिकार हो जाते हैं। विशेष रूप से महिलाएं और नाबालिग बच्चे इस संकट के केंद्र में हैं। बिहार, झारखंड और ओडिशा जैसे राज्यों से जुड़े नेटवर्क यह पुष्टि करते हैं कि हरियाणा में यह समस्या स्थानीय नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय स्तर के संगठित अपराध का हिस्सा है। बेहतर शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य का झांसा देकर बच्चों को उनके घर से दूर ले जाया जाता है। हरियाणा में हाल ही में भिक्षावृत्ति और बाल श्रम से मुक्त कराए गए 350 से अधिक बच्चे इस कड़वी सच्चाई को उजागर करते हैं कि चौराहों और धार्मिक स्थलों पर दिखने वाले मासूम चेहरे किसी संयोग का नहीं, बल्कि एक सुनियोजित 'भिक्षावृत्ति तंत्र' का हिस्सा हैं। आज का मानव तस्करी नेटवर्क केवल एक अपराध तक सीमित नहीं है। जांच एजेंसियां मानती हैं कि नशा तस्करी, साइबर अपराध और मानव तस्करी अब एक-दूसरे के पूरक बन चुके हैं। हरियाणा पुलिस का वर्ष 2026 के लिए 'अपराध नियंत्रण रोडमैप' उम्मीद जगाता है, जिसमें तकनीक आधारित ट्रैकिंग और अंतरराज्यीय समन्वय पर जोर दिया गया है। पुलिस महानिदेशक की सख्ती सराहनीय है, लेकिन प्रश्न यह है कि क्या केवल प्रशासनिक कार्रवाई से इस नासूर को खत्म किया जा सकता है? सच्चाई यह है कि इस समस्या के पीछे गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक असमानता जैसे कारक हैं। जब परिवारों के पास रोजगार के साधन नहीं होते, तो वे आसानी से दलालों के चंगुल में फंस जाते हैं। सरकार की जिम्मेदारी केवल अपराधी को पकड़ने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन परिस्थितियों को बदलने की भी होनी चाहिए जो किसी नागरिक को असुरक्षित बनाती हैं। समाज की भूमिका यहाँ निर्णायक है। अक्सर हम संदिग्ध गतिविधियों को देखकर यह मेरा काम नहीं है समझकर आंखें मूंद लेते हैं। यही चुप्पी अपराधियों के लिए ढाल बनती है। जागरूक समाज ही अपराध के खिलाफ सबसे मजबूत दीवार है। साथ ही, बच्चों को केवल मुक्त कराना पर्याप्त नहीं है; उनके पुनर्वास, शिक्षा और मानसिक काउंसलिंग पर ध्यान देना आवश्यक है। तस्करी का दंश झेलने वाले बच्चे गहरे मानसिक आघात में होते हैं, जिन्हें सही देखभाल न मिलने पर वे दोबारा उसी गर्त में गिर सकते हैं। अंततः, यह समस्या केवल आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि उस हर परिवार की पीड़ा है जो आज भी किसी आहट पर अपने बच्चे की वापसी की उम्मीद लगाए बैठा है। यदि हमने इसे अब भी एक गंभीर मानवीय संकट नहीं माना, तो इसकी भविष्य की कीमत बहुत भारी होगी।

प्राचीन श्री श्याम मंदिर ऐलनाबाद में 52वां विशाल वार्षिक महोत्सव श्रद्धा व भक्ति भाव से जारी

रात्रि जागरण व अखंड ज्योति पाठ में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

ऐलनाबाद (रमेश भार्गव). शाबाश इंडिया

शहर के प्राचीन श्री श्याम मंदिर में बाबा खाटू श्याम जी का 52वां विशाल वार्षिक महोत्सव श्रद्धा, भक्ति और आस्था के साथ निरंतर जारी है। महोत्सव के अंतर्गत बीती रात्रि विशाल जागरण का आयोजन किया गया, जिसमें दूर-दराज से पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा श्याम के भजनों पर भाव-विभोर होकर पूरी रात भक्ति रस का आनंद लिया। इस दौरान पूरा मंदिर परिसर ह्लजय श्री श्यामह्व के जयघोष से गुंजायमान रहा। जागरण के दौरान भजन गायकों ने 'श्याम तेरी चौखट पे आकर सुकून मिल गया', 'सांवरा जब बुलाएगा हम खाटू जाएंगे', 'मेरे सांवरिया सरकार, तू ही मेरा आधार' और 'दर तेरे आके बाबा सब दुख भूल गए' जैसे भावपूर्ण भजनों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। श्रद्धालु देर रात तक बाबा की भक्ति में लीन नजर आए। आज प्रातः मंदिर परिसर में अखंड ज्योति पाठ विधिवत रूप से संपन्न हुआ। इस अवसर पर विशाखापट्टनम से पधारे नरेश शर्मा ने विधि-विधान से पाठ संपन्न करवाया। पाठ के दौरान भक्तों ने दीप प्रज्वलित कर आहुतियां अर्पित कीं तथा परिवार व समाज की सुख-समृद्धि की कामना की। अखंड ज्योति पाठ के समापन पर विशेष आरती की गई, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में कमेटी ट्रस्ट के प्रधान रतनलाल गिदड़ा, उप-प्रधान पवन कुमार कानसरिया तथा श्री श्याम कला मंडल के प्रधान मांगीलाल गिदड़ा सहित अनेक गणमान्य नागरिक, समाजसेवी एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। आयोजन समिति ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत आगे भी धार्मिक कार्यक्रमों की श्रृंखला जारी रहेगी और श्रद्धालुओं के लिए विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। समिति ने क्षेत्रवासियों से अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर बाबा श्याम का आशीर्वाद प्राप्त करने की अपील की है।

उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ का मोती कटरा में मंगल प्रवेश, पंचकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत माता-पिता की प्रथम गोद भराई एवं सम्मान समारोह संपन्न

आगरा (शुभम जैन). शाबाश इंडिया। मेडिटेशन गुरु उपाध्यायश्री विहसंत सागर जी महाराज ससंघ ने 10 फरवरी की प्रातः 7 बजे बैंड-बाजों एवं भक्तिमय जयघोष के साथ श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर (सेक्टर-7, बोदला) से मंगल विहार कर श्री संभवनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, मोती कटरा में भव्य मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर मोती कटरा जैन समाज द्वारा उपाध्याय संघ का भावपूर्ण एवं ऐतिहासिक स्वागत किया गया। मंगल प्रवेश के पश्चात उपाध्यायश्री ने मंदिर में विराजमान अतिशयकारी प्रतिमाओं के दर्शन किए और धर्मसभा को आशीर्वचन प्रदान किए। इस पावन अवसर पर श्री सर्वतोभद्र जिनालय में आगामी अप्रैल माह में आयोजित होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत श्री पारसदास जैन एवं श्रीमती स्नेहलता जैन को प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी उपलक्ष्य में उनकी प्रथम गोद भराई एवं सम्मान समारोह का आयोजन उपाध्यायश्री के पावन सानिध्य में भक्ति एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ हुआ, जिसके पश्चात उपस्थित समाजजनों ने मेवा, किशमिश, फल एवं अखरोट से तीर्थंकर माता की गोद भराई की। साथ ही तीर्थंकर पिता का तिलक, माला एवं दुपट्टा पहनाकर भव्य स्वागत व सम्मान किया गया। पूरा वातावरण श्रद्धा, भक्ति और उत्साह से सराबोर रहा। इस अवसर पर श्री संभवनाथ दिगंबर जैन मंदिर के अध्यक्ष राकेश जैन 'पदेवाले', अनिल जैन 'कागज', अनंत जैन, मनोज जैन, अनंत कुमार जैन, संजय जैन, पवन जैन, रविन्द्र जैन, संजीव जैन, अमित जैन, मीडिया प्रभारी शुभम जैन सहित अग्रवाल दिगंबर जैन महासभा के पदाधिकारी एवं मोती कटरा सकल जैन समाज के लोग बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

जियोफाइनेंस ऐप पर अब अलग-अलग बैंकों और NBFC की एफडी सुविधा उपलब्ध

मुंबई. शाबाश इंडिया। जियोफाइनेंस ऐप ने अपने प्लेटफॉर्म पर कई बैंकों और एनबीएफसी की फिक्स्ड डिपॉजिट सेवाएं शुरू की हैं। इस पहल से ग्राहकों को अब अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर जाने की आवश्यकता नहीं होगी; वे एक ही ऐप पर विभिन्न बैंकों की एफडी की तुलना कर निवेश कर सकेंगे। ऐप पर यूनिटी स्मॉल फाइनेंस बैंक, सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस बैंक, बजाज फाइनेंस, श्रीराम फाइनेंस, उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक और महिंद्रा फाइनेंस सहित कई प्रमुख संस्थानों की एफडी उपलब्ध हैं। यूजर्स अपनी पसंद और ब्याज दर के आधार पर विकल्पों को फिल्टर कर सकते हैं। वर्तमान में जियोफाइनेंस ऐप पर 8.15% प्रति वर्ष तक की आकर्षक ब्याज दर की पेशकश की जा रही है। यह पूरी प्रक्रिया एंड-टू-एंड डिजिटल है, जिससे कुछ ही मिनटों में एफडी बुक की जा सकती है। साथ ही, एक एकीकृत डैशबोर्ड के जरिए रिटर्न, मैच्योरिटी तिथि और रिन्यूअल रिमाइंडर जैसी सुविधाएं भी ग्राहकों को मिलेंगी। जियोफाइनेंस प्लेटफॉर्म एंड सर्विसेज लिमिटेड के सीईओ सुरभ एस. शर्मा ने कहा, 'एफडी देश में बचत का एक लोकप्रिय विकल्प है, लेकिन ग्राहकों को अक्सर अलग-अलग विकल्पों की तुलना करने और निवेश को ट्रैक करने में कठिनाई होती है। जियोफाइनेंस ऐप के जरिए हम रिसर्च, तुलना, बुकिंग और ट्रैकिंग की पूरी प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी और डिजिटल बना रहे हैं, ताकि यूजर्स अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार बेहतर निर्णय ले सकें।'

स्कूल हेल्थ एंड वेलनेस एंबेसडर प्रशिक्षण का आयोजन, विद्यार्थियों का हो सर्वांगीण विकास: दाधीच

जयपुर. शाबाश इंडिया। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, शाहपुरा के निदेर्शानुसार रायपुर ब्लॉक के विद्यालयों के शिक्षकों के लिए चार दिवसीय 'स्कूल हेल्थ एंड वेलनेस एंबेसडर' प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आरपी कान्हा राम ने बताया कि वर्ष 2025-26 के लिए यह चार दिवसीय गैर-आवासीय प्रशिक्षण राजकीय संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय, घाटी (रायपुर) के संदर्भ कक्ष में आयोजित किया जा रहा है। शिविर निरीक्षण के दौरान मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, रायपुर नरोत्तम कुमार दाधीच ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए इस प्रशिक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल देते हुए शिक्षकों को प्रेरित किया। शिविर प्रभारी सत्यनारायण तातेला ने कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

विभिन्न मॉड्यूल्स पर चर्चा

प्रशिक्षक नवीन कुमार बाबेल ने 'स्वस्थ बढ़ना', 'भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य', 'मूल्य और जिम्मेदार नागरिकता' तथा 'जेंडर समानता' जैसे महत्वपूर्ण मॉड्यूल्स को रोचक गतिविधियों के माध्यम से समझाया। साथ ही, उन्होंने रलहढ ऐप के उपयोग के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। प्रशिक्षक पूनम जीनगर ने स्वास्थ्यपरक आदतों और पारस्परिक संबंधों के महत्व के बारे में प्रतिभागियों को जागरूक किया।

पीवाईएसए द्वारा फॉरेस्ट मैराथन 3.0 का सफल आयोजन

500 से अधिक प्रतिभागियों ने लिया भाग

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)

पंज युवा स्पोर्ट्स एसोसिएशन (पीवाईएसए), खरड़ (मोहाली) द्वारा आयोजित फॉरेस्ट मैराथन 3.0 उत्साह, ऊर्जा और व्यापक जनसहभागिता के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुई। मैराथन में चंडीगढ़ और पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों से विभिन्न आयु वर्गों के 500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लेकर फिटनेस और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूकता बढ़ाना और प्रकृति संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी का भाव विकसित करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में द्रोणाचार्य अवॉर्डी शिव सिंह की उपस्थिति ने आयोजन की गरिमा बढ़ाई। उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि पीवाईएसए युवाओं को सशक्त बनाने, खेल संस्कृति को बढ़ावा देने और सामाजिक सरोकारों को आगे बढ़ाने में सराहनीय कार्य कर रही है। ऐसे आयोजन समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। मैराथन की सफलता में पीवाईएसए के सक्रिय सदस्यों का विशेष योगदान रहा। दलजीत सिंह, रूबी राणा, निर्मल कौर, राज्य लक्ष्मी, दीपक धवन बरवाला, भूपिंदर सिंह, कुणाल नाहर, अमनदीप सिंह, डॉ. मनु, हरमनप्रीत सिंह, राहुल और विनोद सहित अनेक स्वयंसेवकों ने समन्वय और व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आयोजकों ने बताया कि फॉरेस्ट मैराथन 3.0 केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि फिटनेस और पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक सामाजिक पहल है। प्रतिभागियों ने रनिंग रूट, सुरक्षा प्रबंध और समग्र व्यवस्थाओं की सराहना की। विभिन्न वर्गों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को ट्रॉफी एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। महिला वर्ग में ममता ठाकुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि पुरुष वर्ग में आकाश कुमार विजेता रहे। 70 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में बिस्वाना बैनिक ने प्रथम स्थान हासिल कर सभी को प्रेरित किया। कार्यक्रम का समापन ''फिटनेस के लिए दौड़ें, प्रकृति के लिए दौड़ें'' के संदेश के साथ हुआ। पीवाईएसए ने भविष्य में भी ऐसे प्रभावशाली खेल एवं सामाजिक आयोजनों को निरंतर जारी रखने का संकल्प दोहराया।

कर्मशील युवा, सृजनशील राजस्थान

बजट 2026 युवाओं के लिए साबित होगा मील का पत्थर

राज्य सरकार का बजट 2026 युवाओं के लिए उम्मीद और अवसर का संतुलित दस्तावेज बनकर सामने आया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रस्तुत यह बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के विजन के अनुरूप कर्मशील और सृजनशील राजस्थान की दिशा में ठोस पहल करता दिखाई देता है। सबसे महत्वपूर्ण घोषणा परीक्षाओं में पारदर्शिता और विश्वास बहाली को लेकर की गई है। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) की तर्ज पर राजस्थान स्टेट टेस्टिंग एजेंसी (आरएसटीए) की स्थापना का निर्णय युवाओं के लिए राहत भरा कदम है। इससे पेपर लीक जैसी घटनाओं पर रोक लगेगी और मेरिट आधारित चयन प्रक्रिया को मजबूती मिलेगी। स्वरोजगार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 30,000 युवाओं को 10 लाख रुपये तक का ब्याज-मुक्त ऋण उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। इससे स्टार्टअप, लघु उद्योग और स्वयं का व्यवसाय शुरू करने वाले युवाओं को सशक्त आधार मिलेगा। वहीं मेधावी विद्यार्थियों के लिए लैपटॉप खरीदने हेतु 20,000 रुपये के ई-वाउचर की व्यवस्था डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित करेगी। बुनियादी ढांचे के विकास पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। सड़कों, सोलर पार्क और नए एयरपोर्ट जैसी परियोजनाएं न केवल राज्य के विकास को गति देंगी, बल्कि भविष्य में रोजगार, इंटर्नशिप और स्थानीय आर्थिक गतिविधियों के नए अवसर भी सृजित करेंगी। इसके अतिरिक्त अजमेर में टेक्नो हब की स्थापना तथा 500 विद्यालयों में प्रोफेशनल एजुकेशन की शुरूआत युवा कौशल विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। समग्र रूप से यह बजट पढ़ाई, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, रोजगार की तलाश और स्वरोजगार की राह पर अग्रसर युवाओं के लिए सकारात्मक संदेश देता है। निश्चित ही बजट 2026 राजस्थान के युवाओं के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा।

डॉ. नयन प्रकाश गांधी: मैनेजमेंट विश्लेषक एवं पब्लिक पॉलिसी एक्सपर्ट, एलुमनाई आईआईपीएस, मुंबई विश्वविद्यालय

भगवत जिनेंद्र महा अर्चना महोत्सव की आयोजन समिति का अभिनंदन

अध्यक्ष सुभाष जैन व महामंत्री विनोद कोटखावदा को मिली मानद उपाधियाँ

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्रद्धा, समर्पण और विश्वास से की गई भक्ति सदैव फलीभूत होती है। यह उद्गार अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने मानसरोवर में आयोजित सात दिवसीय भगवत जिनेंद्र महा अर्चना महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ के सफल समापन पर व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजन समिति की उत्कृष्ट व्यवस्थाओं और धर्म प्रभावना के लिए पदाधिकारियों का भव्य अभिनंदन किया गया। आचार्य श्री के सानिध्य में आयोजित इस गरिमामयी समारोह में समिति के अध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी सुभाष चन्द जैन,

महामंत्री युवा समाजसेवी विनोद जैन कोटखावदा और कोषाध्यक्ष कैलाश चन्द छाबड़ा का विशेष सम्मान किया गया।

मानद उपाधियों से विभूषण

आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने अपने कर-कमलों से पदाधिकारियों को विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत किया: सुभाष चन्द जैन (अध्यक्ष): 'आर्य मर्यादा विभूषण'

विनोद जैन कोटखावदा (महामंत्री): 'जिन शासन गौरव'

कैलाश चन्द छाबड़ा (कोषाध्यक्ष): 'समाज सारथी'

सभागार में उपस्थित श्रद्धालुओं ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ इस सम्मान का स्वागत किया। इस अवसर पर अजमेर नगर निगम के उप महापौर नीरज जैन और मुनि भक्त बसन्त सेठी को भी प्रशस्ति पत्र भेंट कर आशीर्वाद प्रदान किया गया।

धर्म प्रभावना का अनूठा उत्सव

महोत्सव के दौरान 'श्री 1008 चारित्र शुद्धि महामण्डल विधान' और 'विवाह अणुव्रत संस्कार महोत्सव' का सुव्यवस्थित आयोजन हुआ, जिसकी पूरे समाज ने प्रशंसा की। कार्यक्रम का संचालन कर रहे बाल ब्रह्मचारी तरुण भैया (इंदौर) ने गुरु भक्तों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें साधुवाद दिया। सौम्य मूर्ति उपाध्याय पीयूष सागर महाराज सहित पूरे संघ ने महोत्सव के माध्यम से जैन धर्म की प्रभावना को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूरी टीम को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। समारोह के अंत में आयोजन समिति ने आचार्य संघ के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

दान से उभय लोक में प्राप्त होती है यथेष्ट सफलता: आचार्य प्रसन्न सागर महाराज

निवाई/गुन्सी. शाबाश इंडिया

राष्ट्र गौरव अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ससंघ का बुधवार को सहस्त्र कूट जिनालय, विज्ञा तीर्थ गुन्सी में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर निवाई, चाकसू और जयपुर सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए श्रद्धालुओं ने गाजे-बाजे के साथ गुरुदेव की अगुवानी की। विज्ञा तीर्थ कमेटी के पदाधिकारियों, विमल पाटनी और हितेश छाबड़ा सहित अनेक गुरुभक्तों ने आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। चाकसू और कोथून से विहार कर विज्ञा तीर्थ पहुंचे आचार्य श्री ने संध्याकाल में स्वाध्याय और प्रतिक्रमण के साथ सामायिक की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री ने दान की महिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, दया, करुणा और भक्ति के साथ अपने पास उपलब्ध संसाधनों में से कुछ हिस्सा दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित करना ही वास्तविक दान है। आचार्य श्री ने आगम के अनुसार दान को चार श्रेणियों—ज्ञान दान, आहार दान, औषधि दान और अभय दान—में विभाजित करते हुए बताया कि पात्रता देखकर दिया गया दान ही फलीभूत होता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि जो मनुष्य दान की प्रवृत्ति रखते हैं,

वे इस लोक में यश और वैभव प्राप्त करने के साथ-साथ कर्मों का क्षय कर अंततः मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं। आज होगा निवाई में मंगल पदार्पण विमल जौंला और राकेश संधी ने बताया कि गुरुवार को आचार्य श्री का निवाई शहर में भव्य मंगल पदार्पण होगा, जिसकी तैयारियां सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा उत्साहपूर्वक पूरी कर ली गई हैं।

इंदौर का गौरवः आकाशवाणी उद्घोषक अनुराग जैन 'स्वर ऋषि' की उपाधि से अलंकृत

इंदौर. शाबाश इंडिया। माँ अहिल्या की नगरी के सुप्रसिद्ध आकाशवाणी उद्घोषक और दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के सक्रिय पदाधिकारी अनुराग जैन को उनकी जादुई आवाज और कला साधना के लिए 'स्वर ऋषि' की मानद उपाधि से नवाजा गया है। भारत के प्रख्यात भजन सम्राट श्री अनूप जलोटा ने एक गरिमामयी समारोह में अनुराग जैन को इस विशिष्ट सम्मान से अलंकृत किया। अपनी आवाज के माध्यम से जैन समाज और सांस्कृतिक जगत में विशिष्ट पहचान रखने वाले अनुराग जैन को यह उपाधि मिलना समूचे इंदौर शहर के लिए उपलब्धि मानी जा रही है।

समाज जनों ने व्यक्त की प्रसन्नता

अनुराग जैन की इस उपलब्धि पर इंदौर दिगम्बर जैन समाज और फेडरेशन के गणमान्य सदस्यों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी है। वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. जैनेन्द्र जैन, महावीर ट्रस्ट के अध्यक्ष अमित कासलीवाल, फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोहर झांझरी और हंसमुख गांधी ने कहा कि अनुराग जैन अपनी प्रतिभा से निरंतर समाज का गौरव बढ़ा रहे हैं। बधाई देने वालों में प्रमुख रूप से टी.के. वेद, राकेश विनायका, राजेश जैन दद्दू, भूपेंद्र जैन, विपुल बांझल, मयंक जैन और फेडरेशन की राष्ट्रीय शिरोमणि संरक्षिका श्रीमती पुष्पा कासलीवाल, श्रीमती रेखा जैन एवं मुक्ता जैन सहित अनेक समाज जन शामिल हैं।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

समाजसेवी मधु ललित बाहेती लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित

✍ आजाद शेरवानी

कोटा. शाबाश इंडिया। माहेश्वरी महिला मंडल, कोटा की वार्षिक सभा 'मंथन' के अवसर पर विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। इसी क्रम में वरिष्ठ समाजसेवी मधु ललित बाहेती को उनके दीर्घकालीन सामाजिक योगदान के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती सूरज बिरला तथा विशिष्ट अतिथि आशा माहेश्वरी और राजेश बिरला उपस्थित रहे। मंडल अध्यक्ष प्रीति राठी एवं सचिव सरिता मोहता ने बताया कि मधु ललित बाहेती एक बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी हैं। वे मोटिवेशनल स्पीकर, सक्रिय समाजसेवी एवं पश्चिमांचल उपाध्यक्ष के रूप में विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में उल्लेखनीय भूमिका निभा रही हैं। उन्हें सामाजिक कार्यों और रचनात्मक योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। मधु बाहेती को राजस्थान सरकार द्वारा उत्कृष्ट कार्य हेतु दो बार सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष 2017 में उन्हें ''वूमन ऑफ डिग्निटी इंटरनेशनल अवार्ड'' से भी नवाजा गया था। पिछले 40 वर्षों से वे माहेश्वरी समाज, लायंस क्लब और इनर व्हील क्लब के माध्यम से निरंतर सेवाएं दे रही हैं। उनके समर्पण और नेतृत्व क्षमता के लिए उन्हें ''डायमंड एंड स्टार प्रेसिडेंट'' तथा ''एक्सीलेंस अवार्ड'' जैसे सम्मानों से भी सम्मानित किया जा चुका है। कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों ने मधु ललित बाहेती के सामाजिक योगदान की सराहना करते हुए उनके कार्यों को प्रेरणादायी बताया। समारोह सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

॥ श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥

पद्मपुरा

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026

श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी

एवं

पद्मबल्लभ शिखर कलश - ध्वजारोहण महामहोत्सव

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
पद्मपुरा (बाड़ा) जयपुर, राजस्थान

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि
पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज
ससंघ

: पावन सान्निध्य :
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ

प्रतिष्ठाचार्य : पं. हँसमुख जी जैन (धरियावद) राज.

: पावन प्रेरणा :
गणिनी आर्यिका
105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी
ससंघ

पधारो पद्मपुरा बाड़ा

जहां धर्म की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में इन्द्र एवं अन्य पात्र बनने के लिए सम्पर्क करें।

| सुधीर कुमार जैन 'एडवोकेट' 94140 50432 | हेमन्त सौगानी 'एडवोकेट' 98290 64506 | राजकुमार कोठ्यारी 94140 48432 |

निवेदक

पद्मपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

अन्तर्गत : प्रबन्ध समिति, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (बाड़ा), जयपुर, राजस्थान

सकल दिगम्बर जैन समाज पद्मपुरा एवं जयपुर (राजस्थान)

महोत्सव कार्यालय : एच-24, चितरंजन मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001 | मोबाईल नम्बर : 94140 48432, 98290 64506
क्षेत्रीय कार्यालय : बाड़ा पदमपुरा जयपुर 303 903 | मोबाईल नम्बर : 90579 03365

धर्मनगरी कामां में होगा मुनि प्रणम्य सागर महाराज का मंगल प्रवेश; ब्रज क्षेत्र में पहली बार आगमन

कामां (डीग). शाबाश इंडिया

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज के परम प्रभावक शिष्य और 'अर्हम योग' के प्रणेता मुनि प्रणम्य सागर महाराज ससंघ का गुरुवार, 12 फरवरी को धर्मनगरी कामां (कामवन) में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश होगा। ब्रज क्षेत्र में मुनि श्री का यह प्रथम आगमन है, जिसे लेकर जैन समाज और स्थानीय निवासियों में भारी उत्साह देखा जा रहा है।

दो धाराओं का होगा 'मंगल मिलन': सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष अनिल जैन ने बताया कि मुनि संघ मथुरा चौरासी से पद विहार करते हुए बुधवार रात्रि विश्राम राजकीय विद्यालय, सुहरा में करेंगे। गुरुवार प्रातः डीग गेट पर जैन समाज द्वारा मुनि श्री की भव्य आगवानी की जाएगी। इस अवसर पर एक दुर्लभ दृश्य देखने को मिलेगा, जब मुनि प्रणम्य सागर महाराज का मिलन पूर्व में ही यहाँ विराजमान आचार्य विनीत सागर महाराज एवं मुनि अर्पण सागर महाराज से होगा। दो महान मुनि संघों के इस मिलन को 'दो धाराओं का संगम' माना जा रहा है।

बोलखेड़ा पंचकल्याणक महोत्सव का सानिध्य: जैन समाज के संजय जैन बड़जात्या ने जानकारी दी कि मुनि श्री का यह आगमन बोलखेड़ा ग्राम स्थित पंच बालयती तीर्थ पर होने वाले भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के लिए हो रहा है। 15 फरवरी से गोकुल राम चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस महोत्सव का शुभारंभ घट यात्रा और ध्वजारोहण के साथ होगा।

युवा वर्ग में विशेष उत्साह: डीग गेट से मुख्य बाजार होते हुए मुनि संघ का मंगल पदार्पण विजयमती त्यागी आश्रम तक कराया जाएगा। अर्हम योग प्रणेता के आगमन को लेकर विशेषकर युवा वर्ग में बहुत आकर्षण है। मुनि श्री के दर्शन और उनके सानिध्य में योग व साधना के सूत्रों को सीखने के लिए श्रद्धालु दूर-दराज से कामां पहुँच रहे हैं।

दुर्गापुरा विद्यालय में निशुल्क साइकिल वितरण; 42 छात्राओं के चेहरे पर खिली मुस्कान

जयपुर. शाबाश इंडिया। मुख्यमंत्री निशुल्क साइकिल वितरण योजना के अंतर्गत बुधवार को दुर्गापुरा स्थित महात्मा गांधी बालिका विद्यालय में उत्साह का माहौल रहा। विद्यालय की कक्षा 9 में अध्ययनरत सभी 42 छात्राओं को निशुल्क साइकिलें प्रदान की गईं। नई साइकिलें पाकर छात्राओं के चेहरे खुशी से दमक उठे।

गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति

साइकिल वितरण कार्यक्रम में जैन समाज दुर्गापुरा और बैंकर्स फोरम के अध्यक्ष भागचंद जैन मित्रपुरा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ समाज के प्रतिष्ठित सदस्य सुनील काला (चंदलाई वाले), वर्षा अजमेरा और आशिका जैन ने भी सहभागी बनकर छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

विद्यालय स्टाफ का सहयोग

कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय की प्रधानाचार्या नीति आहूजा के नेतृत्व में पूरे स्टाफ का सराहनीय सहयोग रहा। इस अवसर पर कमला शर्मा, प्रियंका शर्मा, सुशीला शर्मा, शीतल शर्मा, अंजली शर्मा और मनीषा शर्मा सहित अन्य स्टाफ सदस्यों ने व्यवस्थाएं संभालीं और छात्राओं को शिक्षा के प्रति निरंतर समर्पित रहने के लिए प्रेरित किया।

शिक्षा की राह हुई आसान

इस योजना का मुख्य उद्देश्य दूर-दराज से आने वाली बालिकाओं के लिए स्कूल की राह को सुगम बनाना है। अभिभावकों ने भी सरकार की इस पहल और विद्यालय प्रबंधन के प्रयासों की सराहना की, जिससे छात्राओं के समय की बचत होगी और वे अधिक ऊर्जा के साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगी।

भैंसलाना में श्री श्याम संगम पैदल रथ यात्रा का भव्य स्वागत; भजनों की गंगा में डूबे श्रद्धालु

आयुष पाटनी. शाबाश इंडिया

भैंसलाना। धार जिले के राजगढ़ से खाटूश्याम जी (राजस्थान) के लिए प्रस्थान करने वाली छठवीं श्री श्याम संगम पैदल रथयात्रा का रविवार को भैंसलाना ग्राम में उत्साहपूर्ण आगमन हुआ। बाबा श्याम के रथ के स्वागत के लिए ग्रामीणों ने पलक-पावड़े बिछा दिए। यात्रा के आगमन पर समूचा क्षेत्र 'जय श्री श्याम' के जयकारों से गुंजायमान हो उठा।

पुष्पवर्षा के साथ हुआ अभिनंदन

रविवार को श्यामपुरा रोड से जैसे ही पैदल रथयात्रा ने भैंसलाना में प्रवेश किया, ग्रामीणों ने पुष्पवर्षा कर यात्रियों और रथ का अभिनंदन किया। ढोल-नगाड़ों और भक्ति संगीत के साथ यात्रा का स्वागत किसी उत्सव जैसा प्रतीत हो रहा था।

सावित्री विद्या मंदिर में सजा भजनों का दरबार

यात्रा के विश्राम के दौरान सावित्री विद्या मंदिर परिसर में भव्य कीर्तन का आयोजन किया गया। कीर्तन में गायकों ने बाबा श्याम के एक से बढ़कर एक मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। भजनों की धुन पर पदयात्री और ग्रामवासी स्वयं को रोक नहीं पाए और झूमते हुए नजर आए।

राजस्थान बजट प्रतिक्रिया-2026

मिला-जुला बजट, मगर आयुष व होम्योपैथी के लिए कुछ भी नहीं: प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान सरकार के बजट 2026 पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना, वरिष्ठ होम्योपैथ एवं आचार्य, स्वास्थ्य कल्याण होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर, जयपुर ने इसे मिला-जुला एवं मिश्रित बजट बताया है। उन्होंने कहा कि भजनलाल सरकार का तीसरा बजट उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी द्वारा लगभग तीन घंटे में प्रस्तुत किया गया, जिसमें कई घोषणाएं की गईं। हालांकि, हर बार की तरह इस बार भी होम्योपैथी की उपेक्षा की गई है। न तो नई होम्योपैथिक डिस्पेंसरियों की घोषणा की गई और न ही इस क्षेत्र के लिए कोई विशेष बजट प्रावधान किया गया। पूर्व में की गई घोषणाएं और वादे भी अब तक पूर्ण नहीं हो पाए हैं। प्रो. सक्सेना ने कहा कि बजट में अनेक योजनाओं की घोषणा तो की गई है, किंतु उनके लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन कहां से आएंगे, यह स्पष्ट नहीं है। सभी को निःशुल्क स्वास्थ्य और उपचार उपलब्ध कराने की घोषणा की गई है, परंतु इसे किस प्रकार क्रियान्वित किया जाएगा, इस पर भी स्पष्टता का अभाव है। उन्होंने किसानों, युवाओं और महिलाओं के लिए घोषित योजनाओं को सकारात्मक बताया तथा जयपुर के विकास, जल आपूर्ति और सड़कों के निर्माण हेतु किए गए प्रावधानों की सराहना की। साथ ही उन्होंने चिंता व्यक्त की कि निरंतर बढ़ती महंगाई, बिजली, पेट्रोल, डीजल और गैस जैसे गंभीर एवं आवश्यक मुद्दों पर बजट में ठोस समाधान नहीं दिखा। जयपुर में बढ़ते वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए भी कोई स्पष्ट योजना सामने नहीं आई। उन्होंने कहा कि आम आदमी बजट के घाटे, कर्ज, लाभ-हानि और वित्तीय गणनाओं की जटिल भाषा को समझ नहीं पाता। ऐसे में अपेक्षा थी कि बजट अधिक स्पष्ट और जनसरोकारों पर केंद्रित होता।

डडूका में आर्यिका विश्वासश्री माताजी की 'आनंद यात्रा': तनाव मुक्ति और संस्कारों का अनूठा संगम

डडूका. शाबाश इंडिया

आचार्य श्री विराग सागर महाराज की सुशिष्या आर्यिका श्री विश्वासश्री माताजी के सानिध्य में डडूका जैन समाज में धर्म की अपूर्व गंगा बह रही है। माताजी द्वारा संचालित 'आनंद यात्रा' प्रयोग के माध्यम से न केवल धर्म प्रभावना हो रही है, बल्कि आधुनिक जीवन के तनाव से मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त किया जा रहा है।

प्रवचन: संस्कारों से ही गढ़ा जाता है भविष्य

प्रातःकालीन सभा का शुभारंभ आचार्य विराग सागर महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। नवम तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत नाथ के गर्भ कल्याणक महोत्सव पर विशेष अर्घ्य समर्पित किए गए। सभा को संबोधित करते हुए माताजी ने कहा, देव, शास्त्र और गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा ही मनवांछित फल की प्राप्ति का आधार है। एक सच्चा जैन सदैव अपने तीर्थंकरों और गुरुओं पर आस्था रखता

है। उन्होंने विशेष रूप से माताओं और बहनों को प्रेरित करते हुए कहा कि बच्चों को बचपन में दिए गए संस्कार ही उनके भविष्य और व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। माताजी ने समाधिस्थ आचार्य श्री विराग सागरजी के जीवन प्रसंग सुनाते हुए बताया कि उनका जन्म 02 मई 1963 को पथरिया (दमोह) में हुआ था।

तनाव मुक्ति का पथ: 'आनंद यात्रा'

संध्याकाल में आयोजित 'आनंद यात्रा' आकर्षण का केंद्र रही। माताजी ने अपने रोचक और चुटीले अंदाज में श्रावकों को जीवन के तनावों से मुक्त होने के व्यावहारिक सूत्र बताए। उन्होंने स्पष्ट किया कि धर्म केवल क्रियाकांड नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक आनंदमयी

कला है। इस सत्र में बड़ी संख्या में युवाओं और बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। रात्रि सत्र में आयोजित 'प्रश्न मंत्र' प्रतियोगिता में समाजजनों ने अपना ज्ञान परखा। प्रतियोगिता में अजीत कोठिया, रेखा सेठ, राजेंद्र कोठिया और दीक्षिता जैन विजेता रहे, जिन्हें जैन युवा समिति डडूका द्वारा पुरस्कृत व सम्मानित किया गया। इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में समाज अध्यक्ष राजेश जैन, समिति अध्यक्ष चिराग जैन, दिगंबर जैन पाठशाला और जैन युवा समिति का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का समापन सामूहिक जिनवाणी स्तुति के साथ हुआ।

सशक्त और आत्मनिर्भर राजस्थान की ओर बढ़ते कदम

स्वास्थ्य सेवाओं का 'कायाकल्प' करेगा नया बजट: डॉ. एस.एस. अग्रवाल

जयपुर

उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी द्वारा प्रस्तुत बजट 2026-27 प्रदेश की आर्थिक समृद्धि और विकास के पथ पर एक मील का पत्थर है। सरकार ने सेवा, समर्पण और सुशासन को प्राथमिकता देते हुए 'विकसित राजस्थान 2047' की परिकल्पना को साकार करने वाला बजट पेश किया है। 'समृद्ध राजस्थान-स्वस्थ राजस्थान' के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य संबंधी प्रस्ताव न केवल स्वागत योग्य हैं, बल्कि अत्यंत दूरदर्शी भी हैं।

बुनियादी ढांचा और डिजिटल पारदर्शिता

डॉ. एस.एस. अग्रवाल ने कहा कि बजट में स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ मानव संसाधन नियोजन (Human Resource Planning) पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। आमजन को डिजिटल सेवाओं से जोड़ने से टर्शरी केयर अस्पतालों, सीएचसी (CHC) और पीएचसी (PHC) की कार्यप्रणाली में गतिशीलता और पारदर्शिता आएगी। इससे आम आदमी का विकास के प्रति विश्वास और बढ़ेगा।

स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार का संकल्प

बजट में स्वास्थ्य सेवाओं के 'यूनिवर्सल कवरेज', जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy) को 77 वर्ष से अधिक करने, मातृ मृत्यु दर (MMR) को घटाकर 15 प्रति लाख और शिशु मृत्यु दर (IMR) को 10 प्रति हजार जीवित जन्म से कम करने का जो लक्ष्य रखा गया है, वह ऐतिहासिक है। इसके लिए 'रैपिड इमरजेंसी रिस्पांस सिस्टम' का गठन एक सराहनीय कदम है।

आपातकालीन और दुर्घटना राहत: 'राज सुरक्षा' योजना

RAJASTHAN SYSTEM FOR URGENT RESPONSE, ACCIDENT STABILIZATION AND HOSPITAL ACCESS योजना की घोषणा दुर्घटना पीड़ितों के लिए जीवनदान साबित होगी।ट्रॉमा और इमरजेंसी: ट्रॉमा पॉलिसी के लिए 150 करोड़ का प्रावधान और सुपर स्पेशियलिटी कोर्सेज में प्रवेश बढ़ाना यह सुनिश्चित करेगा कि आपातकालीन सेवाएं सभी को सुलभ हों।अग्नि सुरक्षा और उपकरण: चिकित्सा संस्थानों में अग्नि दुर्घटना की रोकथाम और आधुनिक मेडिकल इक्विपमेंट के लिए अलग बजट का प्रावधान असाधारण है।

मानसिक स्वास्थ्य और बाल चिकित्सा

बदलती जीवनशैली और प्रतिस्पर्धा के दौर में 'राजस्थान मेंटल

अवेयरनेस, मॉनिटरिंग एंड ट्रीटमेंट फॉर ऑल' (Rajasthan Mental Awareness, Monitoring & Treatment for All) कार्यक्रम आम आदमी को तनावमुक्त रखने की दिशा में एक बड़ा कदम है। इसके अतिरिक्त:बच्चों के इलाज के लिए 500 बिस्तर के आईपीडी टावर की स्थापना।300 नई पीजी सीट्स की वृद्धि और 500 अतिरिक्त दवा वितरण केंद्रों की स्थापना।

मरीजों और परिजनों की सुविधा को प्राथमिकता

डॉ. अग्रवाल ने विशेष रूप से 'अटल आरोग्य फूड कोर्ट', अत्याधुनिक विश्राम गृह और 'मोक्ष वाहिनी' योजना (पार्थिव शरीर को निशुल्क घर पहुँचाने की सेवा) की सराहना की। उन्होंने कहा कि ये घोषणाएं दर्शाती हैं कि सरकार की मंशा केवल इलाज तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मरीजों और उनके परिजनों की सुविधा व गरिमा के प्रति भी उतनी ही संवेदनशील है। **-डॉ. एस.एस. अग्रवाल पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, IMA चेयरमैन, स्वास्थ्य कल्याण ग्रुप एवं राजस्थान हॉस्पिटल लिमिटेड**

मिथ्या दृष्टि नहीं, सम्यक दृष्टि बनें: निर्यापक मुनि योग सागर जी महाराज

आहार एवं दर्शन हेतु श्रद्धालुओं का तांता लगा: जम्बू जैन सर्राफ

कोटा. शाबाश इंडिया

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र, नसिया जी दादाबाड़ी में आज प्रातः 9 बजे ज्येष्ठ-श्रेष्ठ निर्यापक मुनि 108 श्री योग सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज की भक्ति-भाव से पूजा संपन्न हुई। अध्यक्ष श्री जम्बू जैन सर्राफ ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। उपाध्यक्ष श्री सुमित सैंन्की के अनुसार, पुण्यार्जक परिवार – पदम जी, राजेंद्र जी, हुकम जी काका एवं प्रकाश जी हरसौरा परिवार द्वारा आचार्य श्री के चित्र का अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं शास्त्र भेंट की गई। इसके पश्चात 21 श्रेष्ठी परिवारों द्वारा निर्यापक मुनि 108 श्री योग सागर जी महाराज एवं मुनि 108 श्री

निर्मोह सागर जी महाराज को शास्त्र भेंट किए गए। धर्मसभा को संबोधित करते हुए निर्यापक मुनि 108 श्री योग सागर जी महाराज ने कहा, इस त्रिलोक में मिथ्या दृष्टि जीव असंख्य हैं, जो अवगुणों को भी गुण समझ लेते हैं। पराई वस्तु भी उन्हें अपनी प्रतीत होती है और दूसरों पर दोषारोपण करना वे अपनी शान मानते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि रावण पराक्रमी और महाज्ञानी होते हुए भी दृष्टि की विसंगति के कारण पतन को प्राप्त हुआ। उन्होंने सम्यक दृष्टि अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि अपना सो अपना, तेरा सो तेरा की भावना रखनी चाहिए और किसी पर हावी होने की प्रवृत्ति से दूर रहना चाहिए। राग-द्वेष से मुक्त रहकर परिणामों को शुद्ध करना ही आत्मकल्याण का मार्ग है। प्रवचन से पूर्व मुनि 108 श्री निर्मोह सागर जी महाराज ने भगवान राम, माता सीता एवं लक्ष्मण के जीवन प्रसंगों के माध्यम से गुरु सानिध्य और माता-पिता की आज्ञा पालन का महत्व बताया। महामंत्री श्री महेंद्र कासलीवाल ने आहार की व्यवस्था संबंधी जानकारी दी। कोषाध्यक्ष श्री मनीष मोहिवाल ने बताया कि श्रावक-श्रेष्ठी परिवारों द्वारा कुल 21 चौके लगाए गए। अर्चना (रानी) जैन सर्राफ ने बताया कि मुनि संघ ने क्षेत्र में संचालित परोपकारी योजनाओं का अवलोकन कर सराहना की एवं आशीर्वाद प्रदान किया। धर्मसभा का आयोजन कल प्रातः 9 बजे पुनः पुण्योदय तीर्थ, नसिया जी दादाबाड़ी में होगा।

'चैत्र वदी नवमी' को घोषित हो 'आदि भरतोत्सव'

श्रीमती पुष्पा पांड्या ने राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री से की मांग

जयपुर/इंदौर. शाबाश इंडिया

भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत और देश के गौरवशाली नामकरण के सही इतिहास को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वरिष्ठ चित्रकार व लेखिका श्रीमती पुष्पा पांड्या ने एक राष्ट्रव्यापी मुहिम शुरू की है। उन्होंने महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विभिन्न राज्यों के राज्यपालों और मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर निवेदन किया है कि चैत्र वदी नवमी को 'आदि भरतोत्सव' या 'भारत दिवस' के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाए।

प्रथम तीर्थंकर और प्रथम चक्रवर्ती का गौरवशाली इतिहास

श्रीमती पांड्या ने अपने पत्र में तर्क दिया है कि

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव, जिन्होंने 'असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प' के माध्यम से कर्म युग की शिक्षा दी, उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रथम चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर ही इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा है। **ऐतिहासिक प्रमाण:** इससे पूर्व यह देश ऋषभदेव जी के पिता राजा नाभिराय के नाम पर 'अजनाभ वर्ष' कहलाता था। **तिथी का संयोग:** चक्रवर्ती भरत का जन्म भी अयोध्या नगरी में उनके पिता ऋषभदेव जी के जन्म दिवस (चैत्र वदी नवमी) को ही हुआ था। इस वर्ष यह तिथि 12 मार्च को है।

प्रमुख मांगें और सुझाव:

राष्ट्रीय दिवस: चैत्र वदी नवमी को 'आदि भरतोत्सव' के रूप में मान्यता दी जाए।

पाठ्यक्रम में सुधार: पाठ्य पुस्तकों में यह भ्रामक जानकारी हटाई जाए कि देश का नाम शकुंतला पुत्र भरत के नाम पर पड़ा है। ऐतिहासिक रूप से सम्राट भरत (ऋषभदेव पुत्र) हजारों वर्ष पूर्व हुए थे, जबकि शकुंतला पुत्र भरत महाभारत काल (22वें तीर्थंकर नेमिनाथ जी के समय) के हैं। **प्रतिमा स्थापना:** अयोध्या में भरत चक्रवर्ती की विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा स्थापित की जाए।

अहिंसा दिवस: इस दिन देशभर में पशु वध, मांस विक्रय और सार्वजनिक स्थानों (होटल, रेल, हवाई जहाज) पर मांसाहारी भोजन पर पूर्ण पाबंदी हो।

व्यापक जन-समर्थन

इस मुहिम को देशभर की प्रमुख जैन संस्थाओं का पुरजोर समर्थन मिल रहा है। दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनींद्र जैन, महिला परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मला जैन, दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष शेखर छाबड़ा सहित मंजू अजमेरा, बरखा बड़जात्या और अनेक समाजसेवी संस्थाओं ने हस्ताक्षर अभियान और ईमेल के माध्यम से इस मांग को बुलंद किया है। श्रीमती पांड्या का मानना है कि 'आदि भरतोत्सव' न केवल एक धार्मिक उत्सव होगा, बल्कि यह भारत की प्राचीनता, नैतिकता और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की संस्कृति को विश्व पटल पर सही रूप में पुनर्स्थापित करेगा।

तीर्थंकर ग्रुप की बैठक में 'श्रीलंका' यात्रा का खाका तैयार; धार्मिक खेलों के साथ हुआ नवीन सत्र का आगाज

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप 'तीर्थंकर', जयपुर के नवीन सत्र की महत्वपूर्ण बैठक मालवीय नगर (मालदीव नगर) स्थित जैन मंदिर में हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। भक्ति, मनोरंजन और संगठन विस्तार के संकल्पों के साथ आयोजित इस सभा में आगामी वर्ष की कार्ययोजना पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया।

भक्ति और अनुष्ठान से शुरूआत

कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान शांतिनाथ के दर्शन और भक्तामर पाठ के सामूहिक वाचन के साथ हुआ। इसके पश्चात, सचिव सुरेश-आभा गंगवाल ने चित्र अनावरण और दिनेश-अल्का ने दीप प्रज्वलन कर सभा की विधिवत शुरूआत की। आभा गंगवाल, मंजू छाबड़ा और शशि जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अध्यक्ष डॉ. एम.एल. जैन 'मणि' ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए नए सत्र में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

संगठन विस्तार और विदेश यात्रा पर मंथन

बैठक में मुख्य रूप से दो बिंदुओं पर चर्चा हुई: सदस्यता वृद्धि: ग्रुप की सदस्य संख्या बढ़ाने और नए कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सदस्यों से सुझाव लिए गए। **विदेश यात्रा:** ग्रुप के सदस्यों के लिए आगामी महीनों में श्रीलंका की धार्मिक एवं दर्शनीय यात्रा का प्रस्ताव रखा गया, जिस पर सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहमति जताई।

धार्मिक प्रतियोगिताएं और सम्मान

मनोरंजन सत्र में अल्का, दिनेश और सुरेश गंगवाल ने 'धार्मिक हाउजी' का सफल आयोजन किया। इसमें विजयी प्रतिभागी नवरतनमाला, वीना जी, शशि जी और एन.के. सेठी को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त रोचक गेम्स और सामान्य हाउजी ने कार्यक्रम में उत्साह भर दिया।

समिति का गठन और अभिनंदन

उपहार समिति: नए सत्र के उपहारों के चयन के लिए नवरतनमाला, कमलेश पाटनी और आभा गंगवाल की एक विशेष कमेटी बनाई गई।

जन्मदिन एवं वर्षगाँठ: जनवरी और फरवरी माह में जन्म लेने वाले एवं वैवाहिक वर्षगाँठ वाले सदस्यों का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया।

विशिष्ट अतिथि सम्मान: अध्यक्ष डॉ. एम.एल. जैन रमणिश और डॉ. शांति जैन ''मणि'' ने विशिष्ट अतिथि एडवोकेट दिनेश-अल्का का तिलक, दुपट्टा और माला पहनाकर स्वागत किया। अंत में सचिव सुरेश-आभा गंगवाल ने सभी को सुरुचिपूर्ण भोजन के लिए आमंत्रित किया और अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया।

घातक है बुजुर्गों का अकेलापन

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 20 करोड़ लोग अवसाद से पीड़ित हैं, जिनमें बुजुर्गों की संख्या अधिक है। इसका एक प्रमुख कारण अकेलापन है। अकेलेपन से नकारात्मक भाव उत्पन्न होते हैं, कार्य करने की इच्छा समाप्त होती है और घुटन बढ़ती है। कई बार स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि बुजुर्ग आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं।

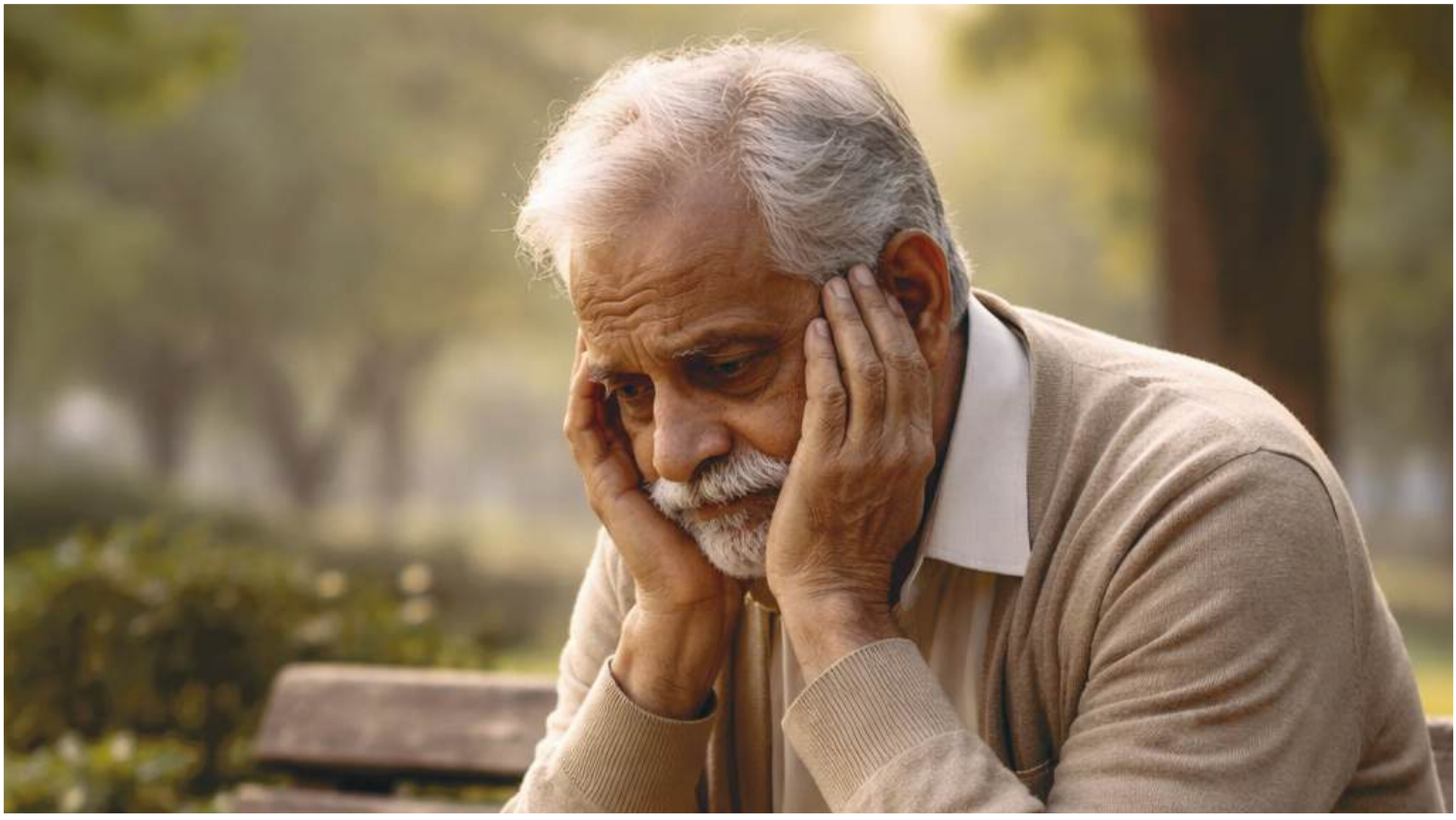

पदम चंद गांधी

आज बुजुर्ग अकेलेपन से जूझ रहे हैं। उनकी पीड़ा, भावनाएँ और विचार सुनने वाला कोई नहीं है। संयुक्त परिवार अब इतिहास बनते जा रहे हैं। एकल परिवार भी अपने दैनिक कार्यक्रमों, पेशे, व्यापार और कार्यस्थलों की व्यस्तता के कारण औपचारिक होते जा रहे हैं। बच्चे ट्यूशन, पढ़ाई, टीवी और मोबाइल में व्यस्त रहते हैं, जिससे बुजुर्ग स्वयं को उपेक्षित और अकेला महसूस करते हैं। इस आयु में जीवनसाथी का बिछुड़ जाना भी किसी अभिशाप से कम नहीं होता। जीवन के अंतिम पड़ाव पर वे अपनी यादें और भावनाएँ साझा करना चाहते हैं, परंतु जब वे अव्यक्त रह जाती हैं तो कुंठा और निराशा जन्म लेती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 20 करोड़ लोग अवसाद से पीड़ित हैं, जिनमें बुजुर्गों की संख्या अधिक है। इसका एक प्रमुख कारण अकेलापन है। अकेलेपन से नकारात्मक भाव उत्पन्न होते हैं, कार्य करने की इच्छा समाप्त होती है और घुटन बढ़ती है। कई बार स्थिति इतनी गंभीर हो जाती है कि बुजुर्ग आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं। हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू की एक रिपोर्ट के अनुसार, अकेलापन व्यक्ति की आयु पर गंभीर प्रभाव डालता है। जितनी आयु प्रतिदिन 15 सिगरेट पीने से घटती है, उतनी ही आयु लंबे समय तक अकेले रहने से घट सकती है।

अकेलेपन से बचाव के उपाय

अंतरवैयक्तिक संबंध मजबूत करें: जीवन में सफलता का बड़ा आधार संबंध होते हैं। बुजुर्ग चौपाल, प्रातः भ्रमण, मित्रों से मिलना, लेखन, बागवानी, संगीत और पारिवारिक मेलजोल से अपने संबंधों को सशक्त बना सकते हैं।

सकारात्मक सोच अपनाएँ: जो हो रहा है उसे स्वीकार कर सहज भाव से जीना तनाव को कम करता है। सकारात्मक दृष्टिकोण मन को शांत रखता है।

भावी पीढ़ी पर विश्वास करें: संतानों को जिम्मेदारी सौंपने से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और बुजुर्गों का मानसिक बोझ कम होता है।

कामनाओं पर नियंत्रण रखें: वृद्धावस्था में इच्छाओं का संतुलन आवश्यक है। मन को संयमित रखकर जीवन सरल बनाया जा सकता है।

अकेलेपन पर नीतिगत पहल: जापान जैसे देशों में अकेलेपन से निपटने के लिए मंत्रालय स्थापित किए गए हैं। भारत में भी समय रहते इस दिशा में पहल आवश्यक है।

तकनीक का सहयोग: एआई और रोबोटिक्स जैसे नवाचार बुजुर्गों के लिए सहायक साथी बन सकते हैं।

ह्यूमन लाइब्रेरी की अवधारणा: संवाद और विचार-विनिमय के लिए ऐसे मंच उपयोगी हो सकते हैं, जहाँ लोग अपनी बात खुलकर कह सकें।

युवा गुणवत्ता समय दें: प्रतिदिन कुछ समय बुजुर्गों के साथ बिताने से उनका मानसिक बोझ हल्का होता है और प्रसन्नता बढ़ती है।

टाइम बैंक का उपयोग: स्वेच्छा से समय दान करने वाली संस्थाएँ अकेले बुजुर्गों की सहायता कर सकती हैं।

स्पष्ट है कि जब बुजुर्ग अपने भाव और विचार साझा कर पाएँगे, तब वे अधिक स्वस्थ, निरोगी और दीर्घायु होंगे। उनके जीवन में उत्साह, उमंग और उल्लास का संचार होगा तथा जीने की इच्छा सुदृढ़ बनेगी।

(यह लेखक के स्वतंत्र विचार हैं। लेखक आध्यात्मिक चिंतक, साहित्यकार एवं सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी हैं।)